ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-5*October-2014

दुनिया मेरी मुठ्ठी में "ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में सूचना प्रौद्योगिकी के आधारभूत साधनों के प्रभाव के संदर्भ में"

सीमा रजा
सहायक प्राध्यापक
गृहविज्ञान
शासकीय कस्तुरण कन्या
महाविद्यालय
गुना

गीताली सेनगुप्ता
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
गृहविज्ञान
माखनलाल चतुर्वेदी
शासकीय स्नातकोत्तर
कन्या महाविद्यालय
खण्डवा म.प्र.

सारांश

मुख्य शब्द : Please Add Some Keywords

प्रस्तावना

सूचना और क्रांति से महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव आया है। आज की महिला सोने के गहने नहीं चाहती बल्कि उन्हें लेपटॉप चाहिए ताकि इंटरनेट के माध्यम से पूरे विश्व की गतिविधियों से जुड़ सके।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। बाहय जगत के साथ समायोजन करते समय जिस चीज का विनिमय किया जाता है। उसकी विषय वस्तु का नाम ही सूचना है। भारतीय समाज की महिलाएँ जो कभी सूचना के अभाव में समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़ी हुई थी। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण उन्हें भी समाज में समानता का दर्जा प्राप्त हुआ।

उद्देश्य

1. प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन का उद्देष्य यह ज्ञात करना है कि –
2. ग्रामीण अंचल की महिलाएँ सूचना प्रौद्योगिकी से कितनी परिचित है ?
3. महिलाओं को सषक्त बनाने वाली सरकारी नीतियों के प्रति ग्रामीण महिलाएँ कितनी जागरूक है ?
4. ग्रामीण किषोरियों के विषय चयन और कॅरियर निर्माण हेतु सूचना प्रौद्योगिकी कितनी जिम्मेदार है ?

सूचना प्रौद्योगिकी ने महिला को पुरानी रूढ़ीवादि मान्यताओं से निकालकर स्वयं के बलबूते पर आगे बढ़ना सिखाया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने नारी को अबला से सबला में परिवर्तित किया है। यह सब केवल सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही संभव हो सका है।

प्राकल्पना

शोध अध्ययन के गूढ़ तथ्यों को ज्ञात करने एवं विवेचना तथा विश्लेषण तक पहुॅचने में मेरी प्राकल्पना है कि

1. कस्बो में रहने वाली महिलाएँ सूचना के आधारभूत साधनों से परिचित होती है।
2. सरकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामीण महिलाओं तक सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों के कारण ही प्रत्यक्ष रूप से पहुँच रही है।
3. ग्रामीण किषोरियाँ भी कॅरियर निर्माण हेतु प्ज्ज् से संबंधित विषयों का चयन करती है। सूचना एवं तकनीकि विकास के कारण महिलाओं को अपनी समस्याएँ निपटाने हेतु घर बैठे जानकारी प्राप्त हो जाती है। टेलीविजन, रेडियों, मोबाइल आदि के कारण सूचनाएं घर–घर पहुँचने लगी है।

अध्ययन पद्धति

शोध अध्ययन को यर्थाथ स्वरूप प्रदान करने हेतु विभिन्न शोध विधियों का प्रयोग किया गया यथा–प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन पद्धति शोध को पूर्णता प्रदान करने हेतु द्वैतियक स्त्रोत अर्थात् पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी अभिलेखों, आँकड़ो एवं इंटरनेट का प्रयोग किया गया।

समग्र व निदर्शन

शोध अध्ययन हेतु सनावद कस्बें की 40 ग्रामीण महिलाएँ एवं 60

ग्रामीण किशोरियों का चुनाव निदर्षन पद्धति के आधार पर किया गया।

विश्लेषण एवं परिणाम

समग्र से प्राप्त जानकारी के आधार पर ग्रामीण अंचल की सभी 100 प्रतिषत महिलाएँ इंफरमेषन टेक्नोलॉजी के आधारभूत साधनों से परिचित है। मोबाइल, रेडियों और टेलीविजन का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में प्रचुरता से करती है। जिससे घर बैठे ही अपनी समस्याओं से निपटने की जानकारी प्राप्त हो जाती है।

महिलाओं को सशक्त बनाने वाली सरकारी नीतियों से केवल 2 प्रतिषत महिलाएँ ही अनभिज्ञ थी। 98 प्रतिषत महिलाएं जानती है कि मध्य प्रदेश त्रिस्तरीय पंचायत राज और स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिषत पद आरक्षित है। घरेलू हिंसा रोकने के लिए ऊषा किरण योजना, आत्मनिर्भरता के लिए तेजस्विनी योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, गाँव की बेटी, लाड़ली लक्ष्मी, रोजगार ग्यारंटी योजना आदि अनेक योजनाओं की जानकारी सभी महिलाओं को है। इन योजनाओं के द्वारा महिलाओं के सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक स्वावलंबन में सहयोग किया जा रहा है।

यू एन वीमेन (संयुक्त राष्ट्र) द्वारा इनफरमेषन टेक्नोलॉजी के साथ क्रियान्वित प्रोजेक्ट ने गाँव–गाँव, शहर–षहर महिलाओं में सषक्तता का अलख जगाया है। महिला बाल–विकास विभाग द्वारा संचालित सभी योजनाओं की जानकारी सभी महिलाओं को है। मध्यान्ह भोजन, राजीव गांधी साक्षरता मिषन आदि कई योजनाओं का लाभ महिलाएँ अपनी बेटियों को दिलवा रही है जो कही न कही जागरूकता का परिचय देती है।

80 प्रतिषत महिलाएँ पंचायत से प्राप्त सेवाओं की जानकारी रखती है। इनमें से 58 प्रतिषत महिलाएँ सुविधाओं का लाभ ले भी रही है। 'हैलो खरगोन' योजना में अपनी षिकायतों के समाधान की जानकारी 40 में से 36 महिलाएँ रखती है। और हैलो खरगोन का नंबर इन सभी महिलाओं को मुँह जबानी याद था। जिस क्षेत्र में महिलाएँ इतनी जागरूक है वहां की किषोरियां भी किसी से पीछे कैसे होगी।

उच्चत्तर माध्यमिक स्तर तक सभी किषोरियों में साक्षरता 100 प्रतिषत पाई गई हायर सेकेण्डरी स्तर पर किषोरियाँ किषोर के मुकाबले प्ज्ज् क्षेत्र को चुनती है और 10 में से 8 किषोरियाँ इस विषय में अपनी महाविद्यालयीन षिक्षा ले रही है। भारत में हर साल 320 विष्वविद्यालयों में से 2 लाख इंजिनियर और 5 हजार पी.एच.डी. स्कॉलर निकलते हैं। भारत के पास विष्व के 28 प्रतिषत कम्प्यूटर और **I.T.** पेषेवर है। जिनमें महिला पुरूषों की भागीदारी क्रमषः 56 और 44 प्रतिषत है इन 28 प्रतिषत पेषेवर में 17 प्रतिषत महिलाएँ है और इन 17 प्रतिषत में से 11 प्रतिषत महिलाएँ छोटे कस्बों एवं ग्रामीण अंचलों से आती है। सनावद कस्बें में भी प्रतिवर्ष दर्जनों लडकियाँ बडें शहरों में उच्च षिक्षा हेतु जाती है और उनमें से कई किषोरिया मल्टी नेशनल कंपनी में उच्च पदों पर आसीन है। तकरीबन 80 प्रतिशत किषोरियाँ सूचना प्रौद्योगिकी को और 20 प्रतिशत किशोरियां परम्परागत विषयों का चुनाव करती है। 60 में से 52 किशोरियाँ इस विषय में उच्च षिक्षा हासिल कर रही है।

आंगनवाडी कार्यकर्ताएं और आशा कार्यकर्ताएं हर ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत है। जो सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं का प्रयोग करती है। मोबाइल से शासन की योजनाओं एवं ग्रामीण महिलाओं से जुड़ी रहती है। जिसके प्रतिपल आंकड़े उनके पास मौजूद रहते हैं यह सब सूचना प्रौद्योगिकी की ही देन है। जिसमें महिलाओं को अबला से सबला में परिणित किया है।

सुझाव

संपूर्ण अध्ययन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि निःसंदेह सूचना प्रौद्योगिकी ने ग्रामीण अंचलों की महिलाओं के जीवन को परिवर्तित किया है, लेकिन कुछ सुझावों की भी आवश्यकता है।

1. सूचना प्रौद्योगिकी के आधारभूत साधनों की पहुँच ही ग्रामीण अंचलों तक है, जैसे– रेडियों, मोबाइल, टेलिविजन। यदि सभी साधनों की गाँव तक पहुँच होगी तो गाँव को भी सर्वसुविधा युक्त बनने में देर नहीं लगेगी।
2. सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में कॅरियर की संभावनाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं है इस विषय में कॅरियर बड़े शहरों की ओर ले जाता है।
3. ग्रामीण महिलाएँ तो अधिकारों के प्रति सचेत है। सरकारी कार्यालयों में भी योजनाओं के क्रियान्वयन में तत्परता दिखानी चाहिए।
4. मोबाइल ने हर हाथो में आकर इससे मिलने वाली सुविधाओं को सरल सहज बना दिया है उसी प्रकार अन्य उपकरण भी जन सर्वसुलभ होंगे तो ग्रामीण अंचलों की बहने भी दुनिया में किसी से पीछे नहीं होगी।
5. ग्रामीण स्तर के हर क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग एवं दखल होना चाहिए जिससे ग्रामीणों को शहरों की ओर न जाना पड़े, साथ ही सूचना प्रौद्योगिकी का इम्पलीकेशन सरल होना चाहिए

Please Add References MLA Pattern